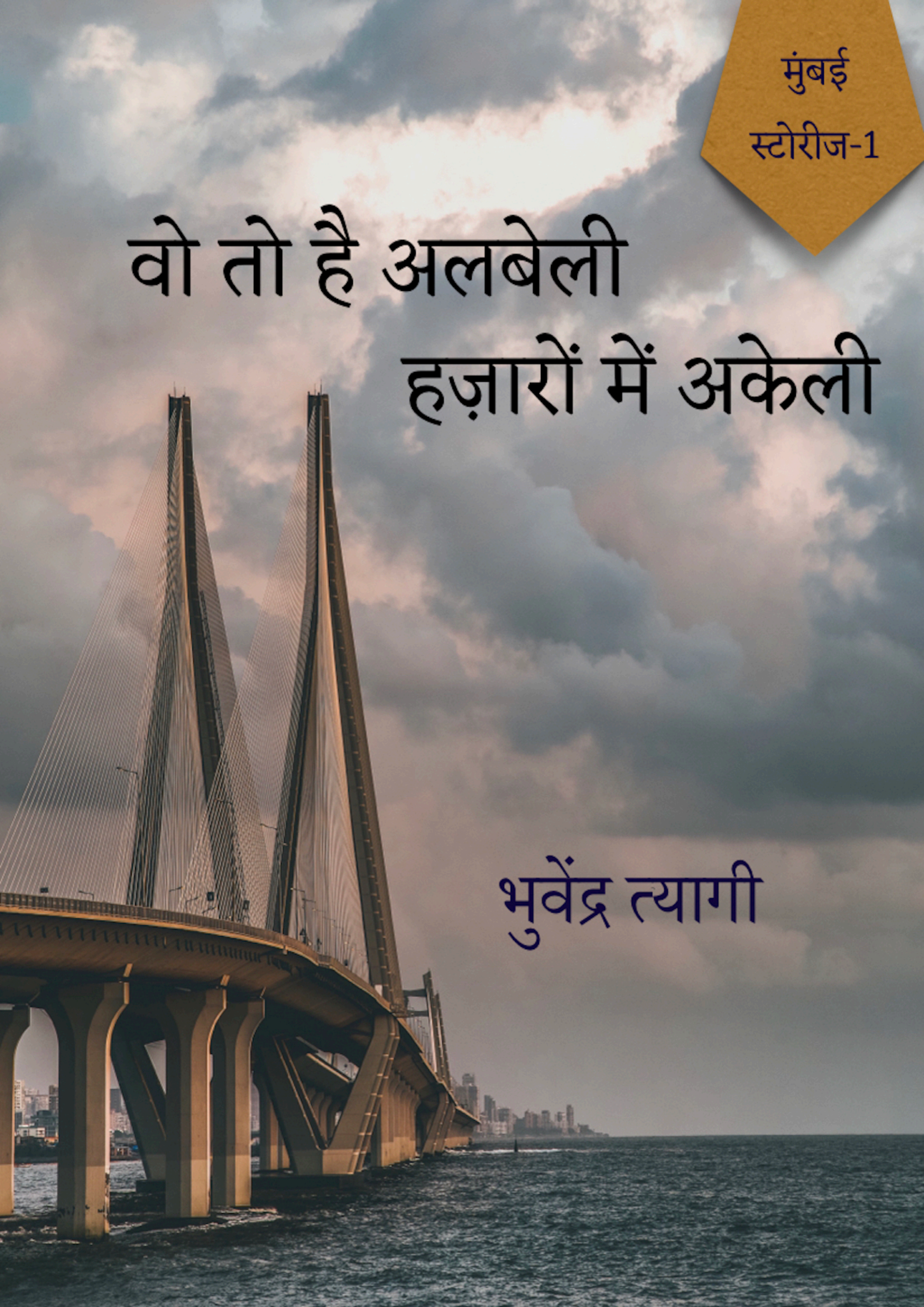

मुंबई स्टोरीज-1

वो तो है अलबेली हज़ारों में अकेली

भुवेंद्र त्यागी

वो तो है अलबेली, हजारों में अकेली ...

मुंबई स्टोरीज-1

भुवेन्द्र त्यागी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2022

कवर: सौम्या

© भुवेंद्र त्यागी

अनुक्रम

मम्मा मुझे पता है, भाई का जन्म कैसे हुआ	3
आखिर मैंने इतने पापड़ क्यों बेले!	7
... जिंदगी का मज़ा कहीं खो सा गया है!	13
एक रात तारों की छांव में	17
...तो हमारी मदद कौन करेगा?	21
आला रे आला, पाऊस आला!	25
बोल्ड इश्यूज पर बोलने से डरते हैं हम	29
वो तो है अलबेली, हजारों में अकेली ...	33
बतकही बंद, संवाद पर ताले	38
बस यादें रह जाती हैं	43

1

मम्मा मुझे पता है, भाई का जन्म कैसे हुआ

मैं सन्न रह गया... ऐसी सिचुएशन से मेरा वास्ता पहली बार पड़ा था।

लास्ट वीकएंड की बात है। मैं कुछ दोस्तों के परिवारों के साथ डिनर पार्टी में था। आईपीएल, उसके विवादों और ग्लैमर पर चर्चा चल रही थी। हम सब चटखारे लेकर छोले-भटूरे खा रहे थे। जी हां, मुंबई में छोले-भटूरे! दरअसल इस पार्टी में हमारे अलावा और कोई उत्तर भारतीय परिवार नहीं था। हमारे मराठी, गुजराती और दक्षिण भारतीय दोस्तों ने टिपिकल नॉर्थ इंडियन खाने की फरमाइश की थी। इसीलिए मेरी पत्नी रीना ने छोले भटूरे, सलाद, रायता और लौकी का हलवा बनाया था। सबकी जीभ पर उसका स्वाद था और जबान पर तारीफ। बच्चे धमाचौकड़ी मचा रहे थे... तभी यह हुआ।

हमारी पड़ोसन गायत्री का सात साल का बेटा सुनील तूफान की तरह आया। अपनी मां के गले में झूलते हुए बहुत मासूमियत से बोला, 'मम्मा, मुझे पता है अनिल का बर्थ कैसे हुआ...'। छह महीने का अनिल उसका छोटा भाई है।

'कैसे हुआ', गायत्री ने प्यार से उसके गाल को थपथपाते हुए पूछा।

'आपका पीरियड मिस हुआ होगा... आप प्रैग्नेंट हो गई होंगी... और फिर अनिल का बर्थ हुआ...', सुनील उतनी ही मासूमियत से बोला।

हम सबके हाथों के कौर मुंह में जाने से पहले हवा में ही लहरा गए। किसी के चेहरे पर गुस्से की रेखाएं खिंचीं, तो किसी के चेहरे पर विस्मय की। मेरे अंदर का पत्रकार सजग हुआ। मैं गायत्री की ओर पहलू बदलकर बैठ गया, कि देखूं उसका रिएक्शन क्या

होता है! मुझे लगा, या तो वह उसे डांट देगी या बात को टाल देगी। पर इससे भी बड़ा अजूबा अभी दिखना था।

‘तुझे कैसे पता?’, गायत्री ने एकदम सहज आवाज में कहा।

‘क्यों नहीं पता चलेगा मुझे? टीवी पर देखा था मैंने। ऐसे ही तो होता है। लावण्या और एनेट दीदी भी अभी यही बात कह रही थीं।’ सुनील का हौसला और खुला। हमारे पड़ोसी परिवारों की बच्चियां लावण्या और एनेट सातवीं क्लास में पढ़ती हैं।

गायत्री अब जरूर टीवी को कोसेगी, मैंने सोचा। पर ऐसा भी नहीं हुआ।

गायत्री ने उतनी ही सहजता से कहा,

‘हां। ऐसा ही हुआ था। टीवी पर ठीक बताया था।’

अपनी ‘खोज’ को मां के साथ शेयर करके सुनील फिर उछलता-कूदता दूसरे कमरे में जाकर बच्चों के साथ खेलने में मशगूल हो गया। वे अपना खाना उधर ही ले गए थे। खा भी रहे थे, खेल भी रहे थे।

मुझे लगा, गायत्री अब हमें कुछ सफाई देगी। आज के बच्चों के ‘सामान्य ज्ञान’ के बारे में कुछ कहेगी। पर ऐसा भी नहीं हुआ। वह अपनी गोद में अनिल को लिए खाना खाती रही। उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं आया। वह एकदम सहज रही।

श्रीधर की पत्नी राजश्री से रहा नहीं गया। सलाद मुंह में डालते हुए बोली, ‘गायत्री, तुमने सुनील को डांटा क्यों नहीं? क्या वल्गर बात करके गया है वो?’

‘इसमें वल्गर क्या था? सही ही तो कह रहा था’, गायत्री अब भी सहज थी।